जनवरी २०२६

अक्रम एक्सप्रेस

संपादकीय

बालमित्रों,

क्या आपके मित्र ने कभी अपना फेवरिट खिलौना या फिर चॉकलेट आपके साथ शेयर किया है? जब कोई अपनी मनपसंद चीज़ हमारे साथ शेयर करता है तो हमें बहुत खुशी मिलती है। लेकिन जो शेयर करता है उसे तो हमसे भी ज्यादा खुशी मिलती है।

सिर्फ चीज़ें ही शेयर की जा सकती हैं, ऐसा नहीं है। अगर कोई अकेला हो तो हम अपना टाइम शेयर कर सकते हैं और किसी को कुछ नहीं आता हो तो हम जानकारी भी शेयर कर सकते हैं। चलो, इस अंक में देखते हैं कि ज्ञानी 'शेरिंग' के बारे में क्या कहते हैं? टीटू ने क्या शेयर किया और अनुजा को शेरिंग से क्या मिला? थीओ ऐन्ड फ्रेन्ड्स इडली अम्मा से मिले, फिर क्या हुआ? और क्या आखिर में चिली मिला या नहीं? चलो, पढ़ते हैं।

- डिम्पल मेहता

Sharing is Caring

अक्रम एक्सप्रेस

January, 2026
Year 13, Issue : 10
Conti. Issue No.: 154
Published Monthly

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन: ९३२८६६११६६/७७
Email: akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Editor: Dimple Mehta
Published by Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist.- Gandhinagar.

© 2026, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

Price Per Copy: NIL

थीओ ऐन्ड फ्रेन्ड्स कोयम्बतूर घूमने गए थे। सुबह का समय था। वे वॉटर फॉल्स देखकर वापस लौट रहे थे। रिज़ो को ज़ोर की भूख लगी। उसने अपने बैग में रखी फाइवस्टार चॉकलेट निकाली और एक ही बाइट में पूरी चॉकलेट खा गया। थीओ, ज़ोई और जिफ्फी उसे देखते रह गए। भूख तो सबको लगी थी। लेकिन रिज़ो ने किसी से चॉकलेट खाने के लिए पूछा तक नहीं। ज़ोई को पता था कि रिज़ो के बैग में और भी चॉकलेट्स हैं। वह इतंजार कर रही थी कि रिज़ो उन्हें निकालेगा। लेकिन उसने कहा, 'फ्रेन्ड्स, थोड़ी चॉकलेट्स मैं बैग में बचा कर रख रहा हूँ ताकि भूख लगने पर खा सकूँ।' ऐसा कहकर उसने बैग बंद कर दिया और सब उसे देखते रह गए।

ज़ोई ने कहा, 'सबको भूख लगी है इसीलिए हम 'इडली अम्मा'

के जादुई किचन में नाश्ता करने जा रहे हैं!' कोई कैफ़े होगा, ऐसा सोचकर सब निकल पड़े। लेकिन वह कोई कैफ़े नहीं, एक नब्बे साल की बुजुर्ग अम्मा की रसोई थी। रास्ते में ज़ोई ने सबको इडली अम्मा के बारे में बताया, "उनका असली नाम कमलाथल है। उनके गाँव के लोग उन्हें प्यार से 'इडली अम्मा' कहकर बुलाते हैं। वे सिर्फ एक रुपये में स्वादिष्ट इडली, सांबर और चटनी खिलाती हैं। और इसीलिए ही उनका नाम 'इडली अम्मा' पड़ा।"

रिज़ो के कान खड़े हो गए 'सिर्फ एक रुपये में?! यह तो फाइव स्टार चॉकलेट से भी कम कीमत हुई।'

ज़ोई ने आगे कहा, "इतनी कम कीमत में खाना खिलाने का उनका मकसद यही है कि गरीब मजदूरों को भरपेट खाना मिले और कोई भी भूखा न रहे। वे लगभग पिछले तीस सालों से रोज़ाना यह काम कर रही हैं। इडली अम्मा खुद बहुत ही साधारण हालात में रहती हैं। फिर भी, बिना किसी की मदद के वे रोज़ सुबह जल्दी उठकर लगभग छः सौ इडली बनाती हैं और सबको प्यार से खिलाती हैं। इडली अम्मा से कई

बार इडली के दाम बढ़ाने को कहा गया लेकिन अम्मा ने 'ना' कह दिया। उन्हें पता है कि अगर एक रुपये में इडली मिलेगी तो मजदूर आराम से भरपेट खा सकेंगे।"

बातों-बातों में सब इडली अम्मा के घर तक पहुँच गए। सांबर और चटनी की मज़ेदार खुशबू हवा में फैली हुई थी।

इस खुशबू से थीओ के पेट में इतनी ज़ोरो से 'गुड़गुड़-गुडगुड़' हुई कि पक्षियों का कलरव भी थोड़ी देर के लिए रुक गया।

घर के बाहर लंबी लाइन लगी हुई थी। नब्बे साल की अम्मा आँखों में चमक और हाथों में जोश के साथ सबको इडली दे रही थीं।

थीओ ऐन्ड फ्रेन्ड्स को देखकर अम्मा ने सबका स्वागत किया और खाना खाने बिठाया। रिज़ो ने इडली अम्मा से पूछा, 'अम्मा, आपको इतना सारा काम करके थकान महसूस नहीं होती?'

तो अम्मा ने प्यार से कहा, 'नहीं, नहीं... कभी नहीं। दूसरों को सुख देने से मुझे सुख मिलता है और काम करने की शक्ति भी!'

अपना पेट भरने का सोचे बिना, दूसरों का पेट भरकर इडली अम्मा का दिल भर जाता है।

उनकी स्टोरी सुनकर थीओ ऐन्ड फ्रेन्ड्स का दिल भर आया। इडली अम्मा को थैन्क यू कहकर सभी वापस लौटने के लिए निकल पड़े।

रास्ते में रिज़ो ने कहा, 'इडली खाने के बाद डेज़र्ट तो चाहिए न?' यह कहते हुए उसने बैग में से फाइव स्टार चॉकलेट्स निकालीं और सबको एक-एक दे दी।

चलो खेलें...

नीचे दी गई चीजें ढूँढ़िए और संख्या लिखिए।

यह तो नई ही बात है!

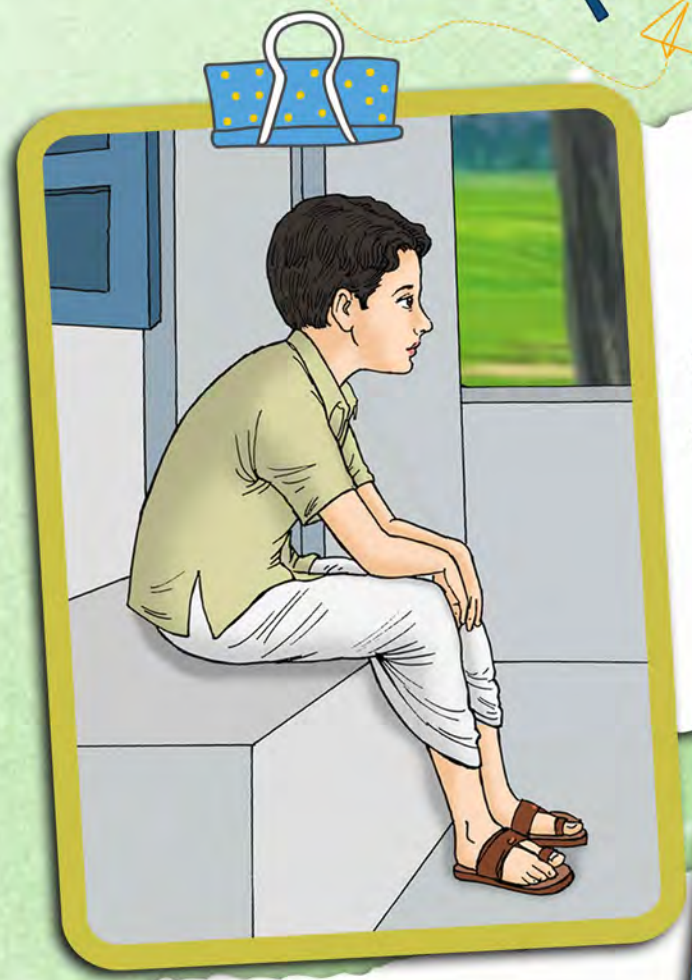

बचपन में दादाश्री के भादरण वाले मकान के सामने एक खाली कम्पाउन्ड था।

क्योंकि कम्पाउन्ड का कोई उपयोग नहीं होताा था इसलिए दादाश्री ने सोचा, 'चलो, मैं यहाँ सब्जियाँ उगाऊँगा।' उस समय दादाश्री की आयु तो छोटी थी लेकिन उन्हें सब्जियों के बीज बोकर, उन्हें खाद-पानी देकर उगाना आता था।

दादाश्री ने लौकी और मक्का बोया। थोड़े ही दिनों में बड़ी-बड़ी लौकी और मक्का उग आए।

ये सब्जियाँ दादाश्री ने अपने परिवार के लिए नहीं रखीं, बल्कि आस-पड़ोस में बाँट दीं। इस प्रकार, बचपन से ही दादाश्री को दूसरों को सुख देकर सुख मिलता था।

फोटो-डे

काव्या के बहुत सारे फ्रेन्ड्स और मेरा कोई नहीं। मेरा नाम अनुजा और काव्या मेरी बड़ी बहन है और बेस्ट फ्रेन्ड भी। काव्या मुझे अपनी सारी चीज़ें इस्तेमाल करने देती है। सिर्फ मुझे ही नहीं, अपनी फ्रेन्ड्स को भी।

जब मैं चौथी कक्षा में थी और काव्या पाँचवीं में तब मौसी हम दोनों के लिए ब्रेसलेट किट लाई थीं। उसमें ब्रेसलेट बनाने का सामान था। वो इतना अच्छा था कि मैंने तो सोच लिया था कि मैं रोज़ एक नया ब्रेसलेट बना कर पहनूँगी।

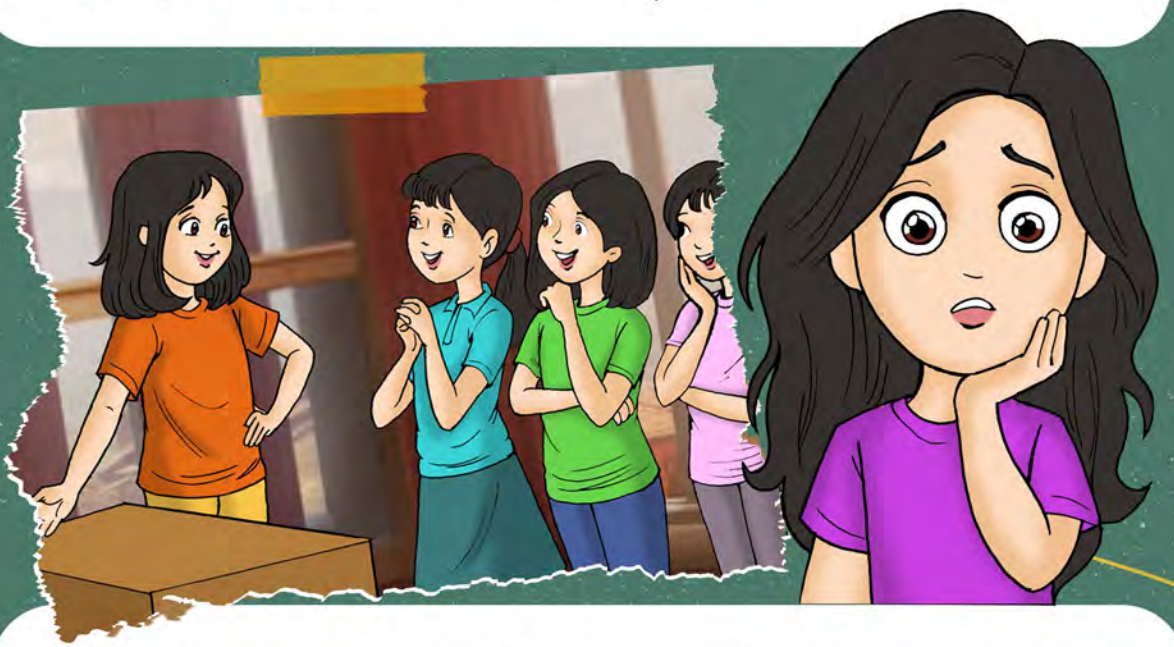

और काव्या ने क्या किया, पता है? उसने अपनी सारी फ्रेन्ड्स को घर बुलाया। सबने साथ मिलकर ब्रेसलेट्स बनाए। काव्या ने सबको एक-एक ब्रेसलेट दिया और एक अपने लिए रखा। ऐसा कौन करता है?

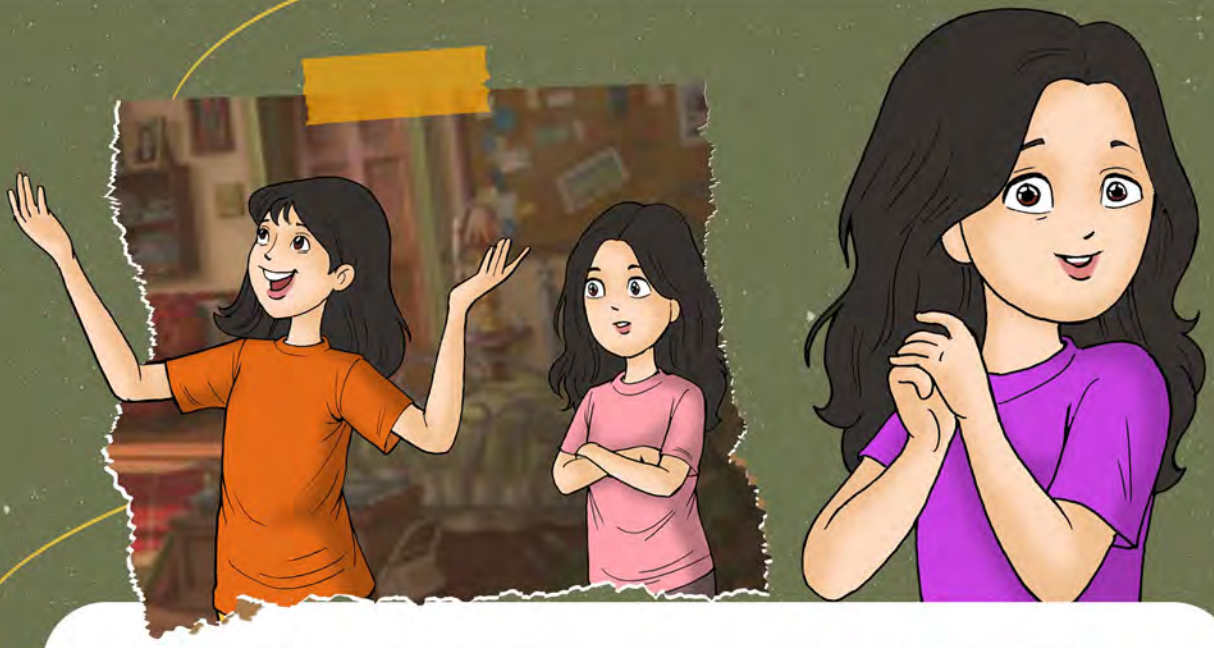

मुझे ऐसा लगता है कि अगर मैं अपनी चीज़ें दूसरों के साथ शेयर करूँगी तो वे कम हो जाएँगी और काव्या कहती है कि वह अपनी चीज़ें दूसरों के साथ शेयर करती है तो ही उसे मज़ा आता है। अकेले-अकेले कुछ भी करने में मज़ा नहीं आता।

वह मुझे कहती है कि 'दूसरों के साथ खुशी शेयर करते हैं तो अधिक खुशी मिलती है और फ्रेन्ड्स भी ज्यादा बनते हैं।' मुझे नहीं पता कि ऐसा कैसे होता है।

लेकिन मुझे यह पता है कि स्पेशल कैसे बना जाए। फोटो-डे पर सबसे स्पेशल दिखने के लिए मैंने और काव्या ने सुंदर टी-शर्ट खरीदे। मुझे पता था कि पाँचवीं कक्षा में किसी के पास भी इतना अच्छा टी-शर्ट नहीं होगा।

फोटो सेशन रिसेस के बाद था। मुझसे तो रिसेस खत्म होने का इंतजार ही नहीं हो रहा था। लेकिन फोटो सेशन के दौरान मेरा सारा उत्साह गायब हो गया। ऐसा कैसे हो सकता है?

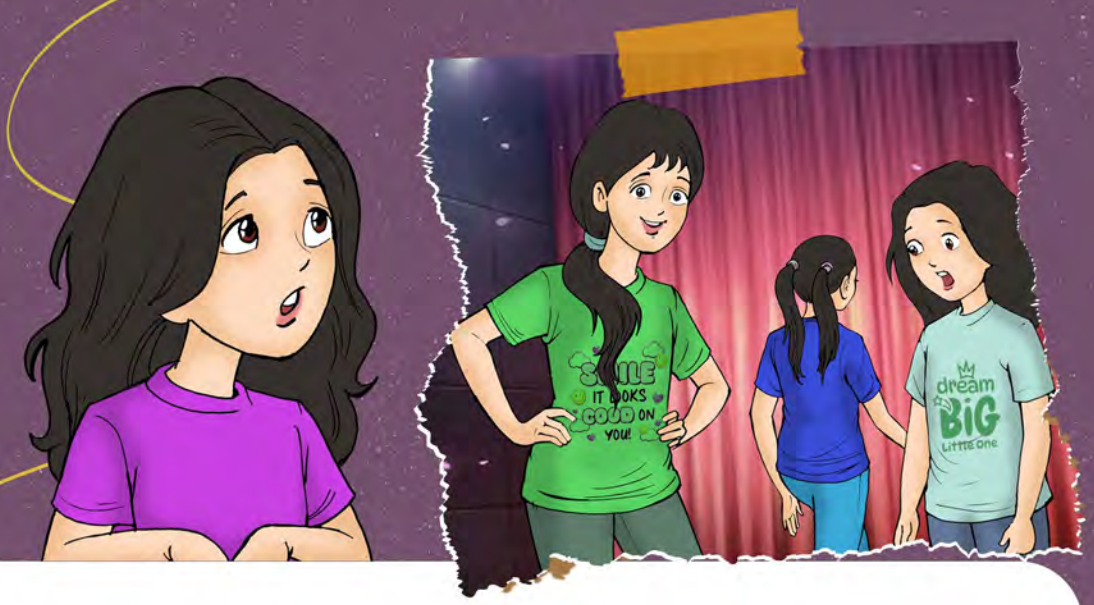

रिसेस के पहले मैंने क्लास में अदिती को नहीं देखा था। फोटो सेशन में देखा तो अदिती ने सेम काव्या जैसा ही टी-शर्ट पहना हुआ था। जब फोटो क्लिक हुआ तब मैंने जबरदस्ती स्माइल की। छुट्टी होने के बाद मैंने दूर से काव्या को स्कूल के गेट पर देखा। उसने यह क्या पहन रखा है?

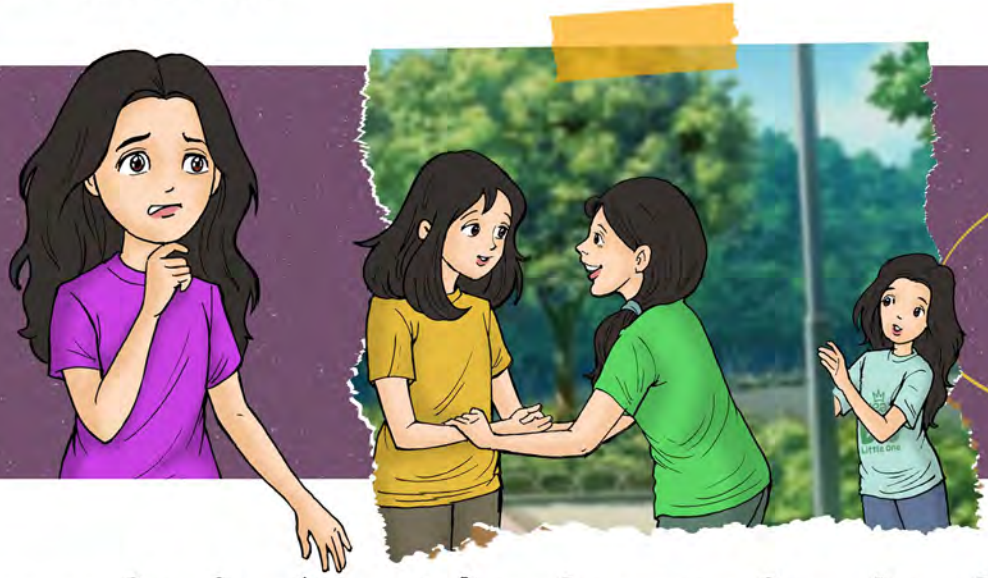

उसका टी-शर्ट कहाँ गया? मैं उसके पास जाती उससे पहले ही अदिती उसके पास पहुँच गई। दोनों कुछ बातें कर रही थीं। अदिती काव्या से 'थैंक यू' कह रही थी।

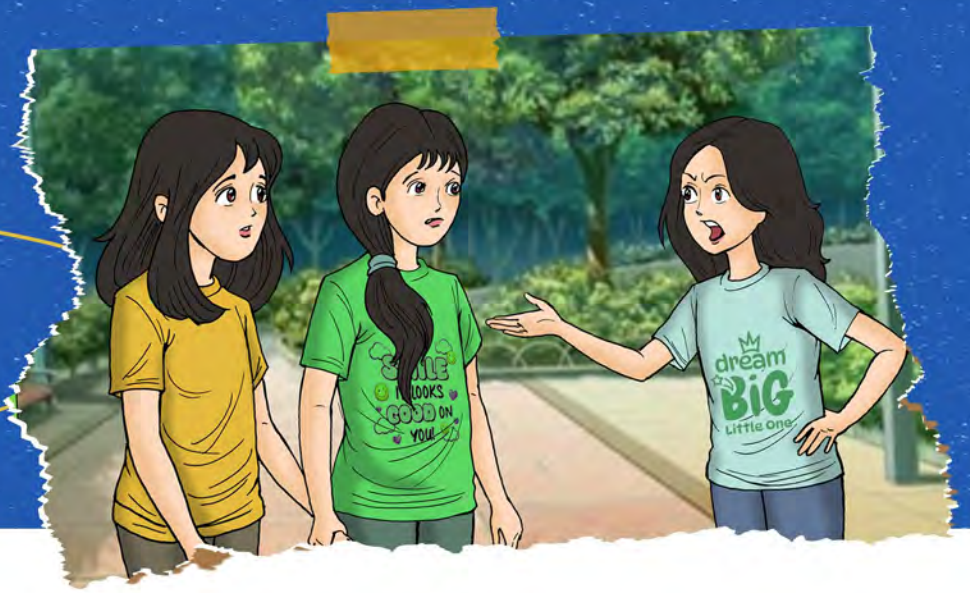

मैं फटाफट वहाँ पहुँची। मैंने काव्या से गुस्से में पूछा, 'तुम्हारा टी-शर्ट कहाँ है?' अदिती बोली, 'उसने मुझे दिया है। तुम दोनों एक-दूसरे को...', 'काव्या मेरी बहन है', मैंने अदिती की तरफ देखे बिना ही गुस्से में जवाब दिया।

काव्या ने कहा, 'अनुजा, मुझे थोड़ा लेट हो रहा है। मैं तुम्हें घर पहुँच कर सब बताती हूँ। बाइ अदिती!' ऐसा कहकर काव्या चली गई।

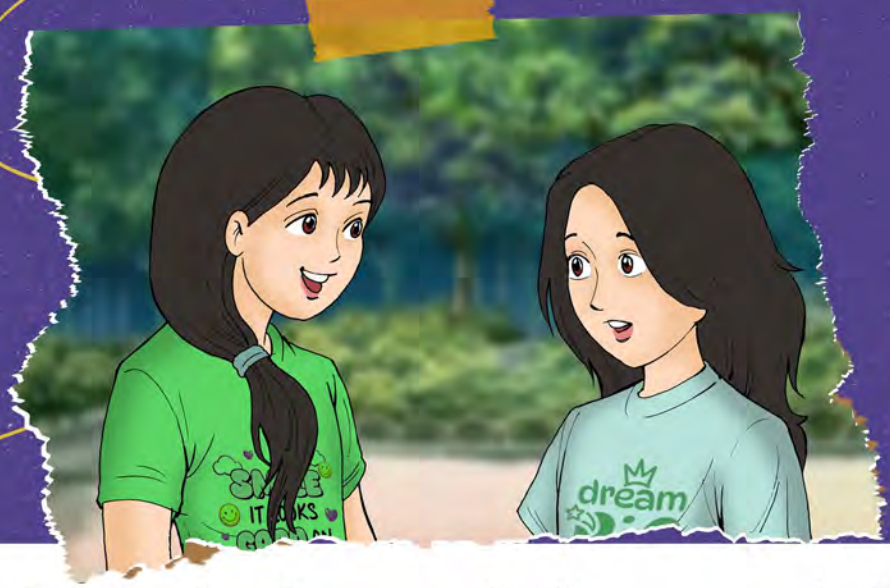

अदिती ने मुझे सारी बात बताई। 'मैं आज एक सुदंर टी-शर्ट पहनकर आई थी। लेकिन रिसेस में नाश्ता करते समय गलती से मेरे टी-शर्ट पर थोड़ा खाना गिर गया। मैं तुरंत ही साफ करने के लिए बाथरूम में गई। लेकिन दाग नहीं निकला। फोटो-डे पर ऐसा दाग वाला टी-शर्ट! मेरी आँखों में आँसू आ गए। उसी समय काव्या बाथरूम में आई।'

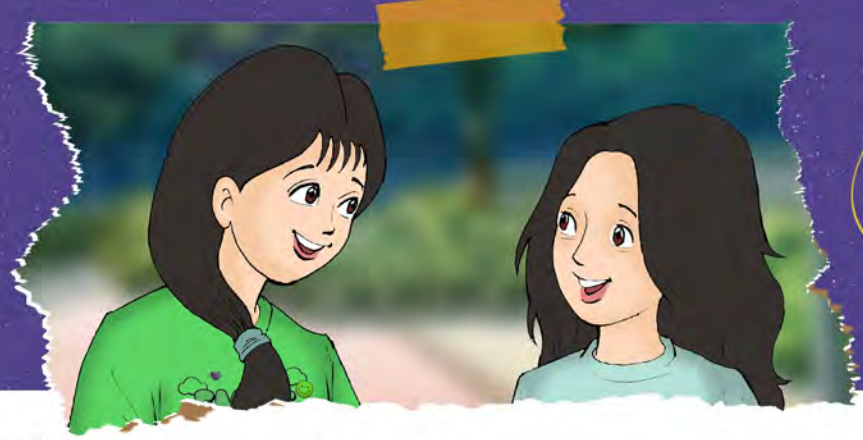

अदिती ने बात को आगे बढ़ाते हुए कहा, 'उसने मुझसे रोने का कारण पूछा और फिर तुरंत ही अपना टी-शर्ट मुझे दे दिया और मेरा दाग वाला टी शर्ट उसने पहन लिया। उसने कहा कि उसका फोटो सेशन रिसेस से पहले ही खतम हो गया है।'

अदिती काव्या की बहुत तारीफ कर रही थी। अदिती की खुशी देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। अदिती ने मेरे साथ और भी कई सारी बातें कीं और मुझे अपने घर आने का निमंत्रण भी दिया। पता नहीं क्या, लेकिन मुझे अंदर ही अंदर बहुत अच्छा लग रहा था!

मैं अपनी चीज़ें दूसरों से साथ शेयर नहीं करती थी क्योंकि मुझे स्पेशल रहना था। लेकिन आज काव्या ने अपनी चीज़ शेयर की तो मुझे एक नई फ्रेन्ड मिली। आज मुझे समझ में आया कि दूसरों के साथ कुछ भी शेयर करने में ज्यादा मज़ा कैसे आता है।

ज्ञानी कहते हैं...

लोग अपने ही सुख में जी रहे हैं। दूसरों को सुख मिले तो मुझे सुख मिलता है, ऐसी बातें तो जैसे बिल्कुल गायब ही होने लगी है। दूसरों को कुछ भी देते हैं, तभी से अपना आनंद शुरू होता है। लेकिन लोग सिर्फ लेना सीख रहे हैं! लोग तो यही समझते हैं कि अगर मैं दूँगा तो मेरा खतम हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : जब मेरी फ्रेन्ड को किसी चीज़ की ज़रूरत होती है तो मैं उसे दे देती हूँ, लेकिन वह अपनी चीज़ मुझे कभी नहीं देती। मेरी दूसरी फ्रेन्ड मुझसे कहती है कि मुझे उसे चीजें नहीं देनी चाहिए। तो मुझे क्या करना चाहिए?

नीरू माँ : अगर तुम्हारा देने का मन हो तो देना। तुम्हारा मन बड़ा है तो उसे बड़ा ही रखो न। छोटा मन करने की क्या जरूरत है? ऐसा बड़ा, नोबल मन बनाने में कितने जन्म लग जाते हैं तब जाकर मन बड़ा होता है। मन संकुचित होने में समय नहीं लगता, लेकिन बड़ा मन होने में बहुत समय लगता है। (संकुचित मन यानी जो खुद के बारे में ही सोचता है, दूसरों के लिए नहीं सोचता।)

तुम्हें कुदरती रूप से बड़ा मन मिला है तो उसे बिगड़ने नहीं देना। कोई कुछ कहे तो उसकी मत सुनो। क्या हम खुद लुटकर हीरे-मोती, गहने दे देते हैं? ज्यादा से ज्यादा पेन्सिल या रबड़ या हेयर क्लिप होती है, तो ज़रूर देना।

जुगु और टीटू

दूर जंगल में एक हरे-भरे पेड़ के नीचे मशरूम के आकार के घर में एक छोटा सा हरा भँवरा रहता था। उसका नाम जुगु था। जुगु का घर एकदम साफ सुथरा था। उसने रंग-बिरंगी मिट्टी से तरह-तरह की चीजें बनाकर अपने घर को सजाया था। एक कोने में मिट्टी की ट्रेन थी तो दूसरे कोने में मिट्टी की चॉकलेट, आइसक्रीम कोन और छोटे-छोटे तबले रखे हुए थे। दीवार पर जुगु का बड़ा सा फोटो लगा हुआ था, जिसमें उसके हाथ में एक ट्रॉफी थी। ट्रॉफी पर छोटे अक्षरों में लिखा था 'बेस्ट कलाकार'। जब-जब आते-जाते जुगु की नज़र उस फोटो पर पड़ती, तब-तब वह मन ही मन मुस्कुराता। जुगु को सबसे ज्यादा खुद की ही कंपनी पसंद थी। वह अपनी दिनचर्या से खुश था।

उस शाम हमेशा की तरह जुगु अपनी लाल रंग की चाय और बेरी केक लेकर घर के बाहर अपनी पसंदीदा कुर्सी पर बैठा था। अचानक तेज हवा चलने लगी। आकाश एकदम काला हो गया। बिजली और गरज के साथ तेज बारिश होने लगी और जुगु को घर के अंदर जाना पड़ा।

उसी समय जंगल के दूसरे कोने में, टीटू नाम का एक मकोड़ा अपने दोस्तों के साथ घूमने निकला था। बरसात के बहाव में टीटू अपने दोस्तों से बिछड़ गया और तैरते हुए जंगल के ऐसे हिस्से में आ पहुँचा जो उसके लिए बिल्कुल अनजान था। टीटू घबरा गया। कहाँ जाए? क्या करे? कुछ समझ में नहीं आ रहा था। तभी उसे दूर मशरूम के आकार के एक घर में हल्की सी रोशनी दिखाई दी। यह सोचकर कि शायद उसे कुछ हेल्प मिल जाए, टीटू वहाँ गया। उसने दरवाजा खटखटाया।

जुगु चौंक गया। उसके घर तो कभी कोई आता नहीं था। तो ऐसे

तूफान में कौन आया होगा? दरवाजा खोलकर देखा तो टीटू पत्ता ओढ़कर खड़ा था।

'हाय, मैं टीटू हूँ। बारिश के कारण अपने परिवार से बिछड़ गया हूँ। क्या कुछ समय के लिए यहाँ रुक सकता हूँ?'

टीटू की हालत देखकर जुगु की हिम्मत नहीं हुई कि वह 'ना' कहे। 'ठीक है, लेकिन सिर्फ एक रात के लिए।' कहकर जुगु ने टीटू को अंदर बुलाया।

टेबल पर बेरी केक रखा हुआ था। जुगु टीटू के साथ केक शेयर नहीं करना चाहता था। इसलिए उसने तुरंत ही केक फ्रिज में रख दिया। दूसरे दिन सुबह जुगु को 'थैंक यू' कहकर टीटू निकल गया। उसे बहुत ज़ोरो की भूख लगी थी।

उसने आस-पास खाना ढूँढ़ा और थोड़ा खाना इकट्ठा करके एक पत्थर पर जाकर बैठ गया। बस, निवाला मुँह में डालने ही वाला था कि तभी वो रुक गया। आज से पहले उसने कभी अकेले खाना नहीं खाया

था। हमेशा अपने परिवार से साथ बैठकर ही खाया था। स्कूल में भी वह फ्रेन्ड्स के साथ लंच बॉक्स शेयर करके ही खाता था। इसलिए आज उसे अकेले खाना अच्छा नहीं लग रहा था।

जैसे ही उसने एक निवाला मुँह में डाला, तभी मोनू वहाँ आ गया। स्वादिष्ट खाना देखकर मोनू के मुँह में पानी आ गया।

'हाय, क्या तुम मुझे कंपनी दोगे? मेरे पास बहुत सारा खाना है।' टीटू ने कहा।

मोनू तो वैसे ही भूखा था। वह तुरंत टीटू के साथ खाने बैठ गया। दोनों ने बहुत खुशी-खुशी बातें करते हुए खाना खाया। दोनों पहली बार मिले थे, लेकिन जैसे पहले से ही एक-दूसरे को जानते हों, ऐसे दोस्त बन गए।

जुगु ने खड़की में से यह दृश्य देखा। उसे सालों पहले की बात याद आ गई। उस दिन जुगु भी इसी तरह पत्थर पर हनी केक खाने बैठा था।

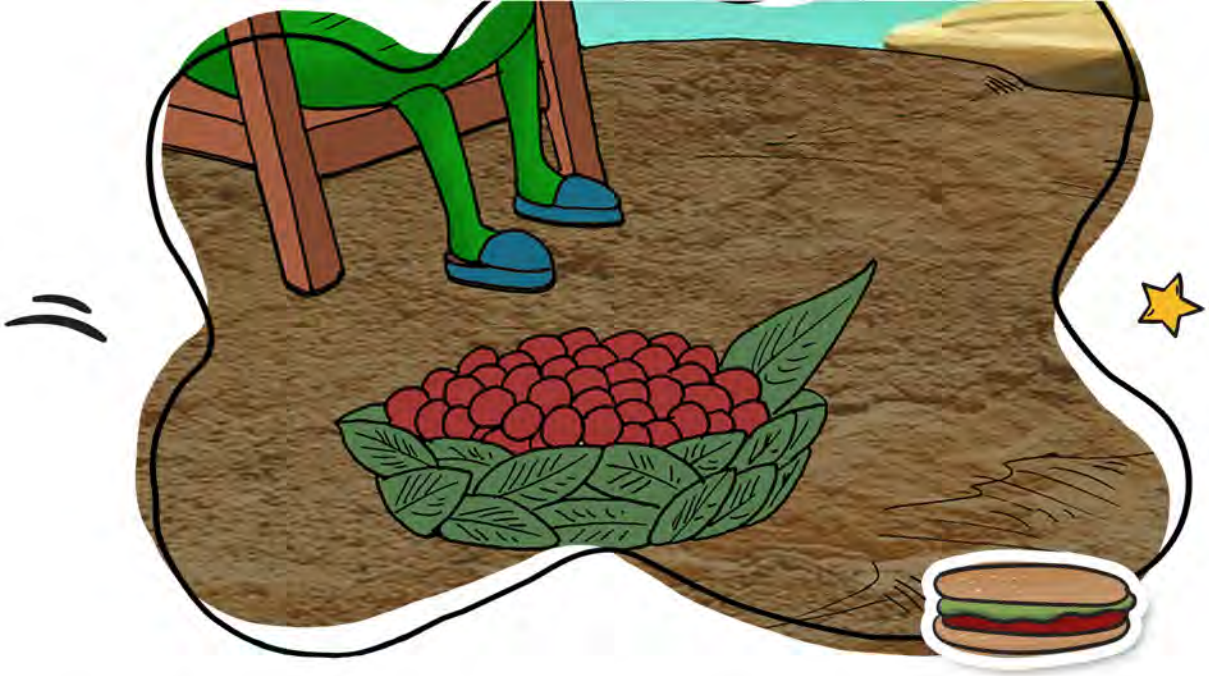

तब सोनू मधुमक्खी ने केक का टुकड़ा माँगा था और जुगु ने उसे भगा दिया था। टीटू और मोनू को ऐसे खुशी-खुशी खाता देखकर जुगु ने मन में सोचा, 'कितना मूर्ख है यह टीटू! रात से भूखा था। फिर भी अपना खाना बाँट दिया!'

शाम को चाय पीने के लिए जुगु अपनी पसंदीदा कुर्सी पर जाकर बैठा। तभी उसकी नजर पत्तों से बनी हुई एक छोटी बास्केट पर पड़ी। उसमें कुछ अंगूर थे और एक पत्ते पर लिखा था,

'जुगु, यह तुम्हारे लिए है। कल मुझे अपने घर में रखने के लिए थैंक यू।'

जुगु को बहुत हैरानी हुई। उसे याद नहीं आ रहा था कि इससे पहले किसी ने उसे कभी कोई भी गिफ्ट दिया हो और उसने भी कभी किसी को कुछ नहीं दिया था। लेकिन उस दिन के बाद से टीटू रोज़ जुगु के लिए कुछ न कुछ लेकर आता और उसके घर के दरवाजे के पर रख जाता। अब जुगु रोज़ गिफ्ट का इंतजार करने लगा। सिर्फ गिफ्ट ही नहीं, लेकिन अब जुगु को टीटू के घर पर होने वाली मस्ती देखने में भी

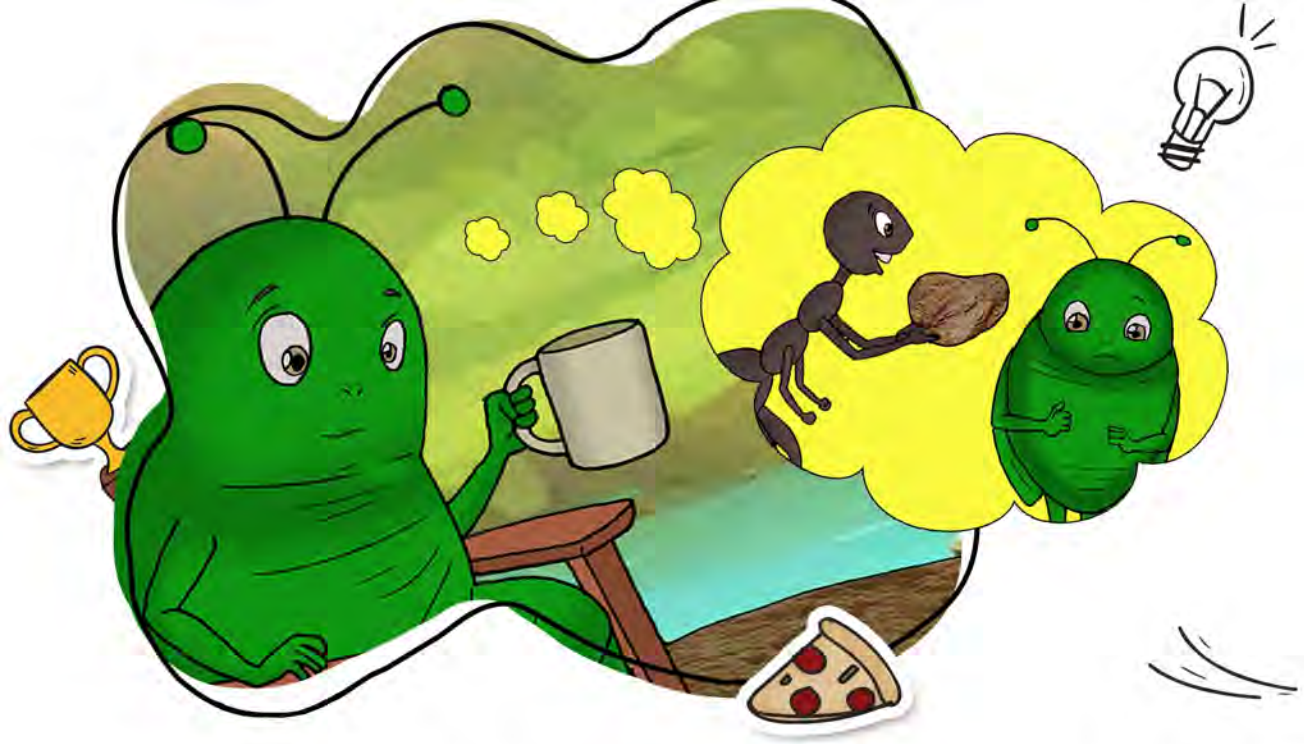

मज़ा आता। आस-पास के दोस्तों की मदद से टीटू ने पत्थर पर एक छोटा सा घर बना लिया था। जहाँ हर शाम उसके दोस्त इकट्ठा होकर हँसी-मज़ाक करते। एक शाम टीटू अपने दोस्तों को गणित सिखा रहा था।

यह देखकर जुगु को वह दिन याद आ गया, जब मोनू ने बड़े उत्साह से जुगु से पूछा था, 'जुगु, तुम मिट्टी की कितनी सुंदर चीज़ें बनाते हो। मुझे भी सिखाओगे?' जुगु ने बहाना बनाकर मना कर दिया था। जुगु को लगता था कि अगर उसने अपनी कला दूसरों को सिखाई तो उसे प्राइज़ नहीं मिलेगा। इसलिए वह अपनी चीज़ों के साथ-साथ अपनी कला भी किसी के साथ शेयर नहीं करता था।

लेकिन टीटू को अपनी कला शेयर करने में कोई आपत्ति नहीं थी। अरे, उसने तो अपने सभी दोस्तों से कहा, 'आज मैं गणित सिखाऊँगा। कल सनी हमें तारों के बारे में समझाएगा और फिर मोनू सबको शंख बजाना सिखाएगा।' तभी टीटू की नजर जुगु पर पड़ी, जो उनकी तरफ ही देख रहा था। टीटू ने ज़ोर से पूछा, 'जुगु, क्या तुम हमारे साथ जुड़ना

चाहोगे?' जुगु ने तुरंत ही मुँह घुमा लिया। लेकिन उसे मोनू की धीमी आवाज सुनाई दी, 'टीटू, उसे मत बुलाओ। वह कुछ नहीं सिखाएगा। उसे ऐसा लगता है कि अगर वह सिखाएगा तो उसे जो आता है वह कम हो जाएगा। उसे तो पता ही नहीं कि जब हम अपनी समझ दूसरों के साथ शेयर करते हैं तो वह कभी कम नहीं होती, बल्कि बढ़ती है! और ऊपर से, शेयर करने में कितना मज़ा आता है। उसे ऐसा मज़ा कभी आया ही नहीं होगा!'

जुगु को मोनू की बात खटक गई। बिना कुछ कहे वह घर के अंदर चला गया। पहली बार उसे ऐसा लगा जैसे दोस्तों के साथ शेयर न करके वह कुछ खो रहा है। वह उदास होकर सो गया। सुबह तेज आवाज से उसकी नींद खुल गई। उसने खिड़की से बाहर झाँक कर देखा तो टीटू का परिवार उसे लेने आया था।

'हमने तुम्हें कितना ढूँढ़ा, टीटू! और तुम यहाँ कितने मज़े कर रहे हो! तुमने कितने सारे फ्रेन्ड्स भी बना लिए हैं।' टीटू की बहन टीना ने कहा।

टीटू के नए फ्रेन्ड्स सोनू, मोनू और सनी खुश थे कि टीटू को उसका परिवार मिल गया। लेकिन साथ ही वे थोड़े दुःखी भी थे कि टीटू चला जाएगा। लेकिन क्या दुःखी होकर फ्रेन्ड को 'बाइ-बाइ' कहना ठीक है? इसलिए सोनू, मोनू और सनी ने टीटू के लिए एक 'गुड बाइ पार्टी' रखी।

टीटू के कहने पर उन्होंने जुगु को भी पार्टी में बुलाया। लेकिन वे जानते थे कि जुगु पार्टी में आएगा ही नहीं!

इसलिए जब उन्होंने जुगु को पार्टी में देखा तो सब हैरान रह गए। जुगु सबके लिए केक लाया था। लेकिन उसके आते ही सब चुप हो गए।

सबको एकदम शांत देखकर जुगु थोड़ी देर के लिए गंभीर हो गया।

'मैंने यहाँ आकर गलती तो नहीं की?' यह बात अभी उसके मन में आई ही थी कि टीटू अचानक बोल पड़ा, "जुगु, मैं बहुत खुश हूँ कि तुम मुझे 'बाइ' कहने आए।" यह सुनकर जुगु को अच्छा लगा।

'मैं तुम सबके लिए केक लाया हूँ।' जुगु ने धीमी आवाज़ में कहा। यह सुनकर सोनू के मुँह से पानी की एक बूँद टपक पड़ी और सब हँस पड़े।

उस शाम जुगु को पार्टी में बहुत मज़ा आया। उसे लगा कि अकेले केक खाने के बजाय सबके साथ शेयर करके खाने में कुछ और ही मज़ा है। पार्टी खत्म होने पर जुगु ने सबसे कहा, 'टीटू तो कल चला जाएगा। लेकिन क्या तुम सब मेरे घर आओगे? मैं तुम्हें मिट्टी से चीज़ें बनाना सिखाऊँगा।'

और बस, उस दिन से जुगु का घर कभी खाली नहीं रहा। जुगु को समझ में आ गया था कि शेयर करने से हम कुछ खोते नहीं, बल्कि पाते हैं।

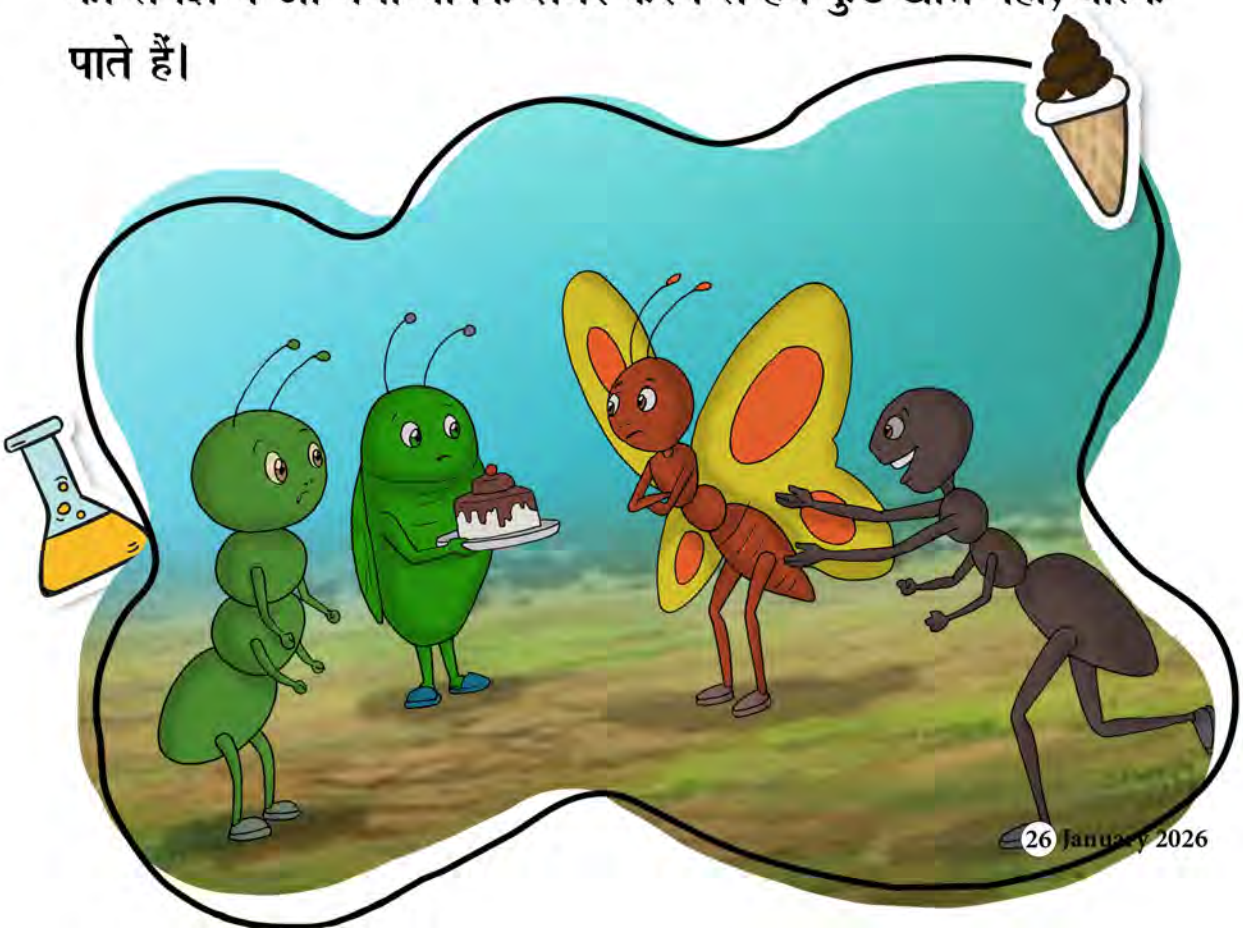

चलो खेलें...

कृषा ने तृषा को गिफ्ट देने के लिए क्या खरीदा वह खोजें...

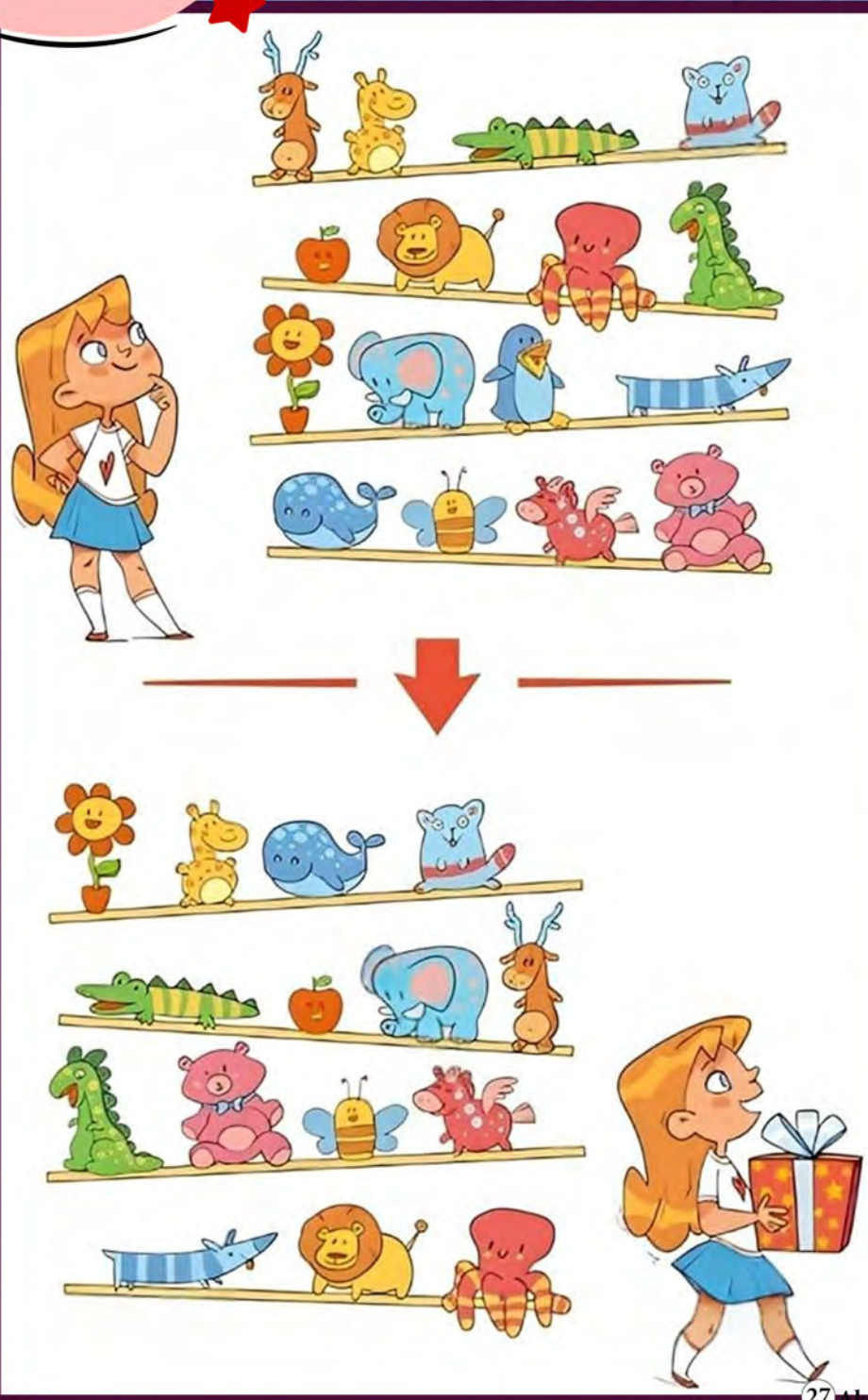

अब तक की आलू-चिली की कहानियाँ एक साथ पढ़ने के लिए...
Click Here : https://dbf.adalaj.org/TdY6ZhXI

चिली और आलू के झगड़े के बाद चिली कहीं मिल नहीं रहा था। उसे ढूँढ़ते-ढूँढ़ते आलू नदी किनारे जाता है। वहाँ पार्सली को पानी में तैरता देखकर आलू गुस्सा हो जाता है। अब आगे...

पार्सली को पानी में तैरते हुए देखकर मैंने गुस्से से पूछा, 'पार्सली, तुम चिली को ढूँढ़ने के बजाय यह क्या कर रहे हो?'

पार्सली ने कहा, 'आलूभाई, इतना भी नहीं पता? मैं यहाँ अपने फ्यूचर बेस्ट फ्रेन्ड का इंतजार कर रहा हूँ। जिस तरह आप चिली को मिले थे वैसे ही मुझे भी यहाँ मेरा बेस्ट फ्रेन्ड मिलेगा!' कहकर वह हँसने लगा। मुझे सच में लगता है कि पार्सली के दिमाग के तार हिल गए हैं। सब घबराए हुए चिली को ढूँढ़ रहे हैं और यह पार्सली अपने बेस्ट फ्रेन्ड की खोज में लगा है! ऐसा कौन करता है?!

चिली की मम्मी ने मुझसे घर जाने को कहा। उन्हें विश्वास था कि रात होने पर चिली घर आ जाएगा। उन्होंने पार्सली को भी चिली शेक का लालच देकर घर भेज दिया।

लेकिन मैं घर नहीं जाना चाहता था। मेरा बेस्ट फ्रेन्ड मुझसे दुःखी होकर कहीं चला गया था। सच कहूँ तो, अब मुझे चिली की बहुत चिंता हो रही थी।

मैंने घर पर माँ को देखा और मैं दौड़कर उनके गले लग गया। मैंने कहा 'माँ, चिली...' तो माँ ने कहा 'चिंता मत करो, मैं तुम्हें नए फ्रेश लड्डू बनाकर दूँगी।' आज सबको क्या हो गया है? चिली मिल नहीं रहा है और एक तरफ पार्सली बेस्ट फ्रेन्ड ढूँढ़ने निकला है, वहीं दूसरी तरफ माँ लड्डू की बात कर रही हैं। मैंने गुस्से से कहा, 'माँ, एक तो चिली मिल नहीं रहा है और आप लड्डू-लड्डू कर रही हो? मेरी तो भूख ही मर गई है।' तो माँ ने कहा 'क्या? चिली नहीं मिल रहा?'

'हाँ माँ, पूरे जंगल में ढूँढ़ा पर कहीं नहीं मिला।'

माँ ने मुझे ऐसे देखा जैसे मैं किसी और ही भाषा में बोल रहा हूँ और फिर वे बोलीं, 'चिली कहाँ खो गया!' अब मेरा गुस्सा बढ़ गया। "अगर मुझे पता होता कि वह कहाँ खो गया है 'तो वह खो गया है' ऐसा मैं कहता ही नहीं न!"

तो माँ ने मुझसे कहा, 'अरे, चिली तो तुम्हारे पलंग पर सो रहा है। तुम्हारे सारे लड्डू खा गया।' मैंने उसे कहा कि 'रहने दो, तुम्हारा पेट फट जाएगा।' पर वह नहीं रुका। कहने लगा, 'मैं आलू को सजा दूँगा। उसके सारे लड्डू खा जाऊँगा। फिर उसे पता चलेगा! मैं उसका बेस्ट फ्रेन्ड हूँ फिर भी वह कोको की साइड लेता है। आज भूखा रहेगा तो पता चलेगा!' बोलता गया और खाता गया। मैंने उससे पूछा, 'क्या तुम्हारा और आलू का झगड़ा हुआ है?'

तो कहता है, 'आन्टी, मैंने आलू से कहा कि आज से हमारी फ्रेन्ड्शिप खतम। लेकिन ऐसा कहा तो आलू रोने लगा और आप तो जानती ही हैं कि जब वह रोता है तो मुझे बहुत दुःख होता है। उसने चाहे कितना भी बुरा किया हो लेकिन वह मेरी वजह से रोए तो मुझे कैसे अच्छा लग सकता है? इसलिए मैंने फ्रेन्ड्शिप तोड़ना कैंसल कर दिया। मैं सारे लड्डू खा जाऊँगा और उसके साथ झगड़ा भी करूँगा। आज आप मुझे रोकना मत।'

उसने इतने लड्डू खा लिए कि वह यहाँ से उठ भी नहीं पा रहा था। फिर मैंने उसे उठाकर तुम्हारे पलंग पर बिठा दिया। जैसे ही मैंने उसे पलंग पर बिठाया, वह सो गया। एक घंटा हो गया, वह इतनी ज़ोर-ज़ोर से खर्राटे ले रहा है कि तुम्हारे पापा आवाज से तंग आकर बाहर चले गए।

चिली को हर जगह ढूँढ़ा और वह आखिरकार आलू के घर पर मिला?! अब क्या होगा? क्या चिली आलू की बात सुनेगा?

ज्ञान मंदिर (गुरुकुल) अडालज में प्रवेश शुरू

ज्ञानमंदिर में रहकर परम पूज्य दादा भगवान के ज्ञान से अपने पुत्र में संस्कारों का सिंचन हो ऐसी इच्छा रखने वाले मात-पिता को अपने पुत्र के इन्टरव्यू के लिए ज्ञानमंदिर, सीमंधर सिटी (अडालज) में एडमिशन हेतु फोन द्वारा रजिस्ट्रेशन करवाना होगा।

प्रवेश केवल कक्षा ५वीं से ९वीं तक के गुजराती एवं अंग्रेजी माध्यम के लिए खुले हैं (प्रवेश केवल लड़कों के लिए है)।

अधिक जानकारी क लिए कृपया नीचे दिए गए फोन नंबर पर संपर्क करें।

संपर्क समय : १० से १२:३० तक एवं दोपहर ३ से ६:३० बजे तक।

फोनः ९९२४३४४४८१

Click Here : https://linktr.ee/gnanmandirgurukul